श्री शंकर शिक्षायतन

वैदिक शोध केन्द्र

श्रीमद्भगवद्गीताद्विमर्श

(पं. मधुसूदन ओझा के विज्ञानभाष्य के आलोक में)

<u>प्रतिवेदन</u>

श्री शंकर शिक्षायतन द्वारा दिनांक ३० दिसम्बर २०२० को सायंकाल ३ बजे से ७ बजे तक एक राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का समायोजन किया गया। यह संगोष्ठी **श्रीमद्भगवद्गीताद्विमर्श** (पण्डित मधुसूदन ओझा के विज्ञानभाष्य के आलोक में) विषय पर आयोजित की गयी। यह आयोजन गूगल मीट के माध्यम से संपन्न हुआ। सत्र का शुभारम्भ वैदिक एवं लौकिक मंगलाचरण से हुआ।

कार्यक्रम में बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल, समन्वयक, श्री शंकर शिक्षायतन ने कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता के विज्ञानभाष्य का मुख्य विषय अव्ययपुरुष है। इस विज्ञानभाष्य में चार प्रधान विद्याओं की व्याख्या की गयी है। राजर्षिविद्या ही वैराग्यबुद्धियोग है। सिद्धविद्याओं के माध्यम से ज्ञानबुद्धियोग को व्याख्यायित किया गया है। राजविद्या के अन्तर्गत ऐश्वर्यबुद्धियोग का प्रतिपादन किया गया है एवं चतुर्थ आर्षविद्या है जिसके माध्यम से धर्मबुद्धियोग का निरूपण हुआ है। अव्ययपुरुष के स्वरूप की आवरण युक्त योगमाया से अव्ययात्मा का स्वरूप बनता है। शक्ति ऐश्वर्य आदि छह भग जिसमें आविर्भूत होते हैं वह भगवान् कहलाता है। इसी क्रम में पुराणों में वर्णित छह ऐश्वर्यों का उल्लेख मिलता है। जो इस प्रकार है- संपूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य इन छह तत्त्वों को भग कहा जाता है। ये छः तत्त्व जिसमें समाहित रहते हैं वह भगवान् कहलाता है।

मुख्यवक्ता डॉ. कृष्ण कान्त झा, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, एम.एल.एस. महाविद्यालय, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय ने कहा कि भगवान् श्रीकृष्ण ने ही अव्ययब्रह्म से संबन्धित बुद्धियोगविद्या का प्रथम उपदेश दिया था। इसमें श्रुति प्रमाण है। जहाँ पर स्पष्टरूप से अव्ययपुरुष की विज्ञानस्वरूपता आत्मविद्या का श्रौत उपनिषद् में अत्यधिक उपदेश प्राप्त होता है। ऋग्वेद में कहा गया है कि जिसने छह लोकों को धारण किया है। उस अजन्मा परब्रह्म के इस नाना जगत् में कोई एकात्म तत्त्व है। श्वेताश्वतर उपनिषद् में कहा गया है कि उस अव्यय के शरीर और इन्द्रियां नहीं हैं। उसके समान और

उससे बढ़कर कोई तत्त्व की प्रतीति नहीं होती है। उनकी शक्ति अनन्त हैं। वह स्वाभाविक ज्ञानवाला और क्रियावाला है।

विशिष्ट वक्ता डॉ. जयवन्त चौधरी, कविकुलगुरु कालिदास विश्वविद्यालय, रामटेक, नागपुर ने अपने वक्तव्य में कहा कि शाकल्य का पदपाठ है, कहीं मन्त्रार्थ नहीं है। पाणिनि का पञ्चाङ्गव्याकरण पाठ है, वेदार्थ का कोई ग्रन्थ नहीं है। अपने निघण्टु की व्याख्या में प्रसक्त यास्क पदों के निर्वचन का कार्य पूरी सूक्ष्मेक्षिका से करते हैं तथा उदाहरण के रूप में निगम को प्रस्तुत कर उसका अर्थ दे कर विरत हो जाते हैं, किसी वेद के भाष्य का प्रणयन इनका भी नहीं है। शाकल्यादि जैसा कार्य ही ओझा जी का है। गीता के पद्यों के पद-पदार्थ के बिना ही उसका मर्म समझने की व्यापक एवं गंभीर दृष्टि ओझाजी ने दी है जो शाश्वत है। इनमें संपूर्ण ब्रह्मविज्ञान समाविष्ट है। इस भाष्य में ओझाजी अनेक शब्दों की व्युत्पत्ति प्रस्तुत करते हैं। धर्म का लक्षण करते हुए ओझाजी लिखते हैं कि धारण किया हुआ जो धारण करता है वह धर्म है। धर्म ही नष्ट होने पर नष्ट करता है। रक्षित धर्म रक्षा करता है। यही धर्म का लक्षण है।

विशिष्ट वक्ता डॉ. पूनम लखनपाल, रघुनाथ महिला महाविद्यालय, मेरठ ने गीता में वर्णित साम्यवाद पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि गीता में ब्रह्म और कर्म तथा विद्या और अविद्या की साम्यावस्था वर्णित है। गीताविज्ञानभाष्य में पं. ओझा जी पाँच तत्वों को आधार मानते हैं। ये हैं- अनासक्ति कर्म, निष्काम कर्म, ईश्वरार्पण कर्म, यज्ञकर्म और जीव और ईश्वर की अभिन्नता। अनासक्ति का अर्थ है कि कर्मफल को आश्रय बना कर कर्म नहीं करना चाहिए। दूसरा निष्काम का उदाहरण है कि फल की कामना नहीं करना चाहिए अपितु कर्म में ही अधिकार है। गीता में सब कुछ ब्रह्म को अर्पित करने का निर्देश है । यज्ञ ही विष्णु है एवं जीव और ईश्वर में अभिन्नता है। गीता में कहा गया है कि भगवान् में जीव को देखना चाहिए एवं भगवान् को जीव में देखना चाहिए। इस प्रकार इन पञ्चात्म कर्म को बन्धन नहीं कहा गया है। समबुद्धि ही परम तत्त्व की प्राप्ति में मुख्य कारण है।

विशिष्ट अतिथि प्रो. मयूरी भाटिया,आचार्या, संस्कृत विभाग, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद ने कहा कि पं. ओझा जी ने श्रीमद्भगवदीता को अपने विज्ञानभाष्य में छह भागों में विभक्त कर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, ये हैं-उपक्रमप्रकरण, राजर्षिविद्याप्रकरण, सिद्धविद्याप्रकरण, राजविद्याप्रकरण, आर्षविद्याप्रकरण और उपसंहार। वैज्ञानिकगीता में ६३६ श्लोक हैं शेष में इतिहास पक्ष को वर्णित किया गया है। अपने व्याख्यान के क्रम में उन्होंने ओझाजी द्वारा प्रतिपादित त्र्यक्षर पर ध्यानाकर्षण किया। ये त्र्यक्षर हैं- भगवत्, गीता और उपनिषद्। पुनः भगवत् (भ+ग+वत्) शब्द में तीन अक्षर हैं, गीता(गी+ता) शब्द में दो अक्षर हैं और उपनिषद् (उ+प+नि+षद्) शब्द में चार अक्षर है। इस प्रकार उन्होंने क्रमशः त्र्यक्षर, द्व्यक्षर और चतुरक्षर की ओझाजी द्वारा की गयी व्याख्या को रेखाचित्र के माध्यम से स्पष्ट किया।

मुख्य अतिथि प्रो. सोमदेव, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने अपने वक्तव्य में कहा कि ओझा जी ने गीता को दो दृष्टि से व्याख्यायित किया है। प्रथम वैज्ञानिक है और दूसरा इतिहास का पक्ष है। यद्यपि गीता महाभारत का विशिष्ट भाग है। अत एव इसके ऐतिहासिक पक्ष अवश्य ही स्वीकार करना चाहिए। विज्ञान से ओझा जी का अभिप्राय सृष्टि प्रतिपादक अव्ययपुरुष की प्रतिष्ठा है। प्रो. सोमदेव जी ने गाँधीजी का उल्लेख किया और कहा कि गाँधी जी ने गीता को माता कह कर समादृत किया है। उन्होंने कहा कि गीता में स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण का कथन है कि वे स्वयं पाण्डवों में अर्जुन हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि भगवान् श्रीकृष्ण पाण्डवों से अधिक प्रेम करते हैं।

प्रो. रविन्द्र नाथ भट्टाचार्य, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता ने अपनी अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि पं. ओझाजी दो प्रकार के उपनिषद् मानते हैं-श्रौती और स्मार्ती। गीता के श्रौती उपनिषद् होने में तो कोई शंका ही नहीं है परन्तु गीता को स्मार्ती उपनिषद् मानने में भी ओझा जी का तर्क है कि विशिष्ट पुरुष भगवान् के द्वारा उपदिष्ट आत्मविद्या में श्रौत विद्या से समानता होने से गीता स्मार्ती उपनिषद् भी है। जिस तत्त्व का वर्णन उपनिषद् करता है उसी तत्त्व का वर्णन गीता भी करती है। अत एव गीता स्मार्ती उपनिषद् है। यह ओझा जी की नवीन दृष्टि है।

इस राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का संचालन श्री शंकर शिक्षायतन के वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ. मणि शंकर द्विवेदी एवं अतिथियों का स्वागत तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. लक्ष्मी कान्त विमल ने किया । कार्यक्रम का समापन शान्तिपाठ से हुआ। गूगल मीट के माध्यम से आयोजित इस कार्यक्रम हेतु ऑनलाइन पंजीकरण द्वारा २५० प्रतिभागियों के लिए सहभागिता हेतु स्थान सुनिश्चित किया गया था जिसमें देश के विभिन्न प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों के आचार्यों एवं शोधार्थियों ने सक्रिय सहभागिता कर कार्यक्रम को सफल बनाया ।